गुरु नानक - सबद ९६

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हुकमि पइआ गरभासि ॥

रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ७४

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हुकमि पइआ गरभासि ॥
उरध तपु अंतरि करे वणजारिआ मित्रा खसम सेती अरदासि ॥
खसम सेती अरदासि वखाणै उरध धिआनि लिव लागा ॥
ना मरजादु आइआ कलि भीतरि बाहुड़ि जासी नागा ॥
जैसी कलम वुड़ी है मसतकि तैसी जीअड़े पासि ॥
कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हुकमि पइआ गरभासि ॥१॥

सार: हम बिना शर्त वाले मन के साथ पैदा होते हैं जो विश्वासों और जटिल व्यवस्था से मुक्त होता है, जिसमें केवल शुद्ध जागरूकता और विशाल क्षमता ही होती है। जैसे-जैसे हम जीवन में आगे बढ़ते हैं, हर विचार एक छाप छोड़ता है जो हमारे आस-पास की दुनिया को समझने और उस पर प्रतिक्रिया करने के तरीके को सूक्ष्म रूप से प्रभावित करती है। यह छाप हमारी पसंद और कार्यों की नींव रखती हैं। अनुभव और जुड़ाव शुरूआती ढांचा स्थापित करते हैं जिसे हमारे बार-बार दोहराए गए विचारों और व्यवहारों के माध्यम से सुदृढ़ भी कर सकते हैं और रूपांतरित भी। यह सब एक गतिशील चक्र में क्रिया करते हैं जिसके माध्यम से जीवन का बड़ा भाग इन्हीं व्यवस्था से चलता होता है। सजगता और सतर्कता के अभ्यास से इन पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है। हम जो सोचते हैं वह गहराई से आकार देता है कि हम क्या बनते हैं। इस जटिल प्रक्रिया को पहचानकर, हम मन की उस क्षमता को जगा सकते हैं जिससे हमारे मूल का सचेत नवीकरण संभव हो सके।

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हुकमि पइआ गरभासि ॥
रात के पहले पहर में, हे व्यापारी मित्र, प्रकृति के विधान के अनुसार गर्भ में प्रवेश होता है। रात का 'पहला पहर' एक परिवर्तनकारी क्षण का प्रतीक है जब अंतरात्मा जागृत होती है। 'व्यापारी मित्र' उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो ईमानदारी से मूल्य का आदान-प्रदान करते हैं, वह

न तो कुछ अनुचित देते हैं, न ही लेते हैं। 'गर्भ' उस शुद्ध अवस्था का प्रतीक है जहाँ अभी व्यक्तित्व ने आकार नहीं लिया है।

उरध तपु अंतरि करे वणजारिआ मित्रा खसम सेती अरदासि ॥
उलटे हो कर तपस्या की, हे मेरे व्यापारी मित्र और अपने प्रियतम से प्रार्थना की है। गर्भ में 'उलटा' होने की छवि एक ऐसी स्थिति का प्रतीक है जिसमें व्यक्तिगत इच्छा, अहंकार और कर्म की भावना अनुपस्थित होती है। 'तपस्या' का अर्थ है अस्तित्व का अपने मूल सार में होना। 'प्रिय से प्रार्थना' जीवन के स्रोत, यानी हमारी आंतरिक सर्वव्यापी चेतना की ओर सहज झुकाव को दर्शाती है।

खसम सेती अरदासि वखाणै उरध धिआनि लिव लागा ॥
तुम प्रियतम से विनती करते हो, गर्भ में उल्टे होकर, तुम ध्यान की अवस्था में हो, चिंतन में लीन हो। गर्भ की छवि ध्यान से देखने का प्रतिनिधित्व करती है जिसमें कोई कार्य नहीं करता, न निर्णय लेता है और न ही प्रयास करता है बल्कि प्राकृतिक शक्तियों द्वारा पोषित होता है। यह अनुरोध जागरूकता की ओर एक सहज खिंचाव को दर्शाता है जब बाहरी जुड़ाव संभव नहीं होता।

ना मरजादु आइआ कलि भीतरि बाहुड़ि जासी नागा ॥
इसमें कोई सामाजिक या धार्मिक रीति-रिवाज निहित नहीं हैं, हम अपनी प्राकृतिक नग्न अवस्था में आते हैं और चले जाते हैं। यह इस वास्तविकता को उजागर करता है कि जीवन की उत्पत्ति रीति-रिवाजों से रहित है। समय के साथ सीखते, अपनाते और प्रशिक्षित होते हैं लेकिन अंत में, हम वैसे ही चले जाते हैं जैसे आए थे, बिना कपड़ों के और सभी पहचानों से मुक्त।

जैसी कलम वुड़ी है मसतकि तैसी जीअड़े पासि ॥
हमारे विचार जो छाप छोड़ते हैं उसी के अनुसार मन खुलता है। यह अवधारणा दर्शाती है कि हमारी प्रशिक्षण द्वारा रखी गई नींव हमारे जीवन की दिशा को प्रभावित करती है, प्रत्येक कार्य और विचार हमारे विवेक और हमारे परिवेश पर अपनी छाप छोड़ता है।

कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हुकमि पइआ गरभासि ॥१॥
नानक कहते हैं, हे मानव, रात्रि के प्रथम प्रहर में प्रकृति के विधान से गर्भ में प्रवेश होता है। यह पुनः उस आत्म-चिंतन की ओर संकेत करता है जो उस परिवर्तनकारी क्षण के परिणामों को समझने में सहायक है, एक ऐसी शुद्ध अवस्था जहाँ व्यक्तित्व का आकार लेना अभी बाक़ी है। (१)

तत्त्व: गुरु नानक काफी कुशलता से 'रात की घड़ी' और 'गर्भ' जैसे रूपकों के माध्यम से सृष्टि के उस प्रारंभ को समझाते हैं जो बिना किसी इरादे या मोलभाव के अपने आप सामने आता है। इन रूपकों के ज़रिए, वह अस्तित्व के मूल सार, चेतना की उस शुद्ध अवस्था पर ज़ोर देते हैं जो भूमिकाओं और उम्मीदों से अछूती है। यह हमारे अस्तित्व का एक अंदरूनी हिस्सा है जो हमारी पसंद या पूर्वाग्रह बनने से पहले मौजूद होता है। अपनी उत्पत्ति की इस सच्चाई को पहचानकर, हम यह समझ सकते हैं कि जब हम अपने अस्तित्व की मूलभूत स्थिति को अपनाते हैं तब हम अपने ‘होने’ से ‘बनने’ की यात्रा में सचेत रूप से विकसित होते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com